

केन्द्रीय विद्यालय संगठन एवं माध्यमिक शिक्षा मण्डल भोपाल से संबद्ध विद्यालयों के विद्यार्थियों की हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान विषय में सतत् एवं समग्र मूल्यांकन की प्रभाविता का अध्ययन

ठाकुर, हिम्मत सिंह

प्राचार्य, विश्वभारती इंस्टीट्यूट ऑफ एज्युकेशन, उज्जैन (म.प्र.)

प्रस्तावना :-

शिक्षा राष्ट्र की आत्मा है। शिक्षा मानव जीवन का प्रमुख अंग है शिक्षा के बिना मनुष्य अधुरा है। शिक्षा ही उसे पशुत्व के संकीर्ण घेरे से निकालकर दैवत्व के उच्च शिखर पर पहुँचाती है। शिक्षा मानव को असत्य से सत्य की ओर व अज्ञान से ज्ञान की ओर ले जाती है।

स्वामी विवेकानन्द ने शिक्षा को परिभाषित करते हुए कहा है कि “शिक्षा मनुष्य में निहित पूर्णता का प्रकटीकरण है।” अर्थात् शिक्षा मनुष्य का समग्र विकास करती है। शिक्षण, अधिगम तथा परीक्षा मूल्यांकन—शिक्षा प्रणाली के ये तीन ऐसे आधार स्तंभ हैं, जिनके ऊपर शिक्षा प्रणाली का विशाल भवन स्थित रहता है। जिस प्रकार भवन की दृढ़ता उसके आधार पर निर्भर करती है ठीक उसी प्रकार शिक्षा प्रणाली की सफलता शिक्षण, अधिगम तथा परीक्षा मूल्यांकन के सूचारु ढंग से जारी रहने पर निर्भर करती है। श्रेष्ठतम अध्यापक, प्रतिभाशाली छात्र, समूचित पाठ्यक्रम, आवश्यक सुविधाओं के रहते हुए भी शिक्षा प्रणाली अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में असफल ही सिद्ध होगी यदि शिक्षण प्रक्रिया तथा परीक्षा मूल्यांकन प्रणाली प्रभावपूर्ण ढंग से कार्य करने में सक्षम न हो।

मूल्यांकन प्रणाली के परम्परागत स्वरूप के बने रहने के कारण वर्तमान मूल्यांकन प्रणाली विगत कई वर्षों से आलोचना का केन्द्र बन गई है। स्वतंत्र भारत की आवश्यकताओं तथा अपेक्षाओं के अनुरूप एक नये भारत के शिक्षा व्यवस्था में सुधार समझा गया तथा शिक्षा व्यवस्था में सुधार के लिए प्रमुख कार्य मूल्यांकन प्रणाली में परिवर्तन लाना था। इसी को ध्यान में रखते हुए सतत् एवं समग्र मूल्यांकन प्रणाली का विकास हुआ।

सतत् एवं समग्र मूल्यांकन वह मूल्यांकन है जो छात्र के सर्वांगीण विकास से संबंधित है न कि केवल ज्ञानात्मक पक्ष से। यह मूल्यांकन अवधि के आधार पर नहीं किया जाता। वास्तव में उस प्रकार का मूल्यांकन परीक्षा अथवा अपरोक्ष रूप से सदा होता रहता है।

समस्या कथन :-

केन्द्रीय विद्यालय संगठन एवं माध्यमिक शिक्षा मण्डल भोपाल से संबद्ध विद्यालयों के विद्यार्थियों की हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान विषय में सतत् एवं समग्र मूल्यांकन की प्रभाविता का अध्ययन

उद्देश्य :-

- केन्द्रीय विद्यालय संगठन द्वारा संबद्ध विद्यालयों में सतत् एवं समग्र मूल्यांकन हेतु अपनाई जाने वाली विविध तकनीकों का अध्ययन हिन्दी तथा सामाजिक विज्ञान विषय के सन्दर्भ में करना।
- विद्यार्थियों की समग्र उपलब्धि के सन्दर्भ में सतत् एवं समग्र मूल्यांकन की प्रभाविता का अध्ययन करना।

परिकल्पना :-

- सी.सी.ई. द्वारा पढ़ाये जाने वाले विद्यार्थियों एवं परम्परागत शिक्षण द्वारा पढ़ाये जाने वाले विद्यार्थियों के पश्च हिन्दी उपलब्धि के माध्य प्राप्तांको में सार्थक अन्तर नहीं होगा।
- सी.सी.ई. द्वारा पढ़ाये जाने वाले विद्यार्थियों एवं परम्परागत शिक्षण द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थियों के पश्च सामाजिक विज्ञान की उपलब्धि के माध्य प्राप्तांको में सार्थक अन्तर नहीं होगा।
- सतत् एवं समग्र मूल्यांकन द्वारा पढ़ाये जाने वाले विद्यार्थियों एवं परम्परागत हिन्दी उपलब्धि के माध्य प्राप्तांकों के कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा, जबकि बुद्धिलब्धि को सहचर के रूप में लिया जाएगा।
- सी.सी.ई. द्वारा पढ़ाये जाने वाले विद्यार्थियों के एवं परम्परागत शिक्षण द्वारा पढ़ाये जाने वाले विद्यार्थियों के सामाजिक विज्ञान के उपलब्धि माध्य प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नहीं होगा जबकि बुद्धिलब्धि को सहचर के रूप में लिया जाएगा।

सी.सी.ई. = सतत् एवं समग्र मूल्यांकन

शोध अध्ययन विधि :-

शोध के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

परिसीमन :-

- शोध अध्ययन को रतलाम शहर के चार माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश एवं चार केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल के विद्यालयों तक सीमित रखा गया है।
- शोध अध्ययन के अन्तर्गत हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान विषय से संबंधित सतत् एवं समग्र मूल्यांकन हेतु अपनाई जाने वाली विविध तकनीकों का ही अध्ययन किया गया है।
- शोध अध्ययन के अन्तर्गत जनसंख्या के रूप में कक्षा 9वी के विद्यार्थियों को ही लिया गया है।

न्यादर्श :-

शोधकर्ता द्वारा न्यादर्श चयन हेतु न्यादर्श की उपर्युक्त विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए सरल यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया गया जिसके अन्तर्गत रतलाम शहर के कक्षा 9वी में अध्ययन कर रहे 200 विद्यार्थी माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश के तथा 200 विद्यार्थी केन्द्रीय विद्यालय संगठन के प्रायोगिक समूह के हैं।

विवरण	माध्यमिक शिक्षा मण्डल म.प्र.	केन्द्रीय विद्यालय संगठन	महायोग
विद्यालयों की संख्या	04	04	08
विद्यार्थियों की संख्या	200	200	400

प्रयुक्त सांख्यिकी :-

शोध अध्ययन से प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण करने हेतु टी-परीक्षण, एनोवा(ANOVA), एनकोवा(ANCOVA), एवं प्रतिशतांक तकनीक का प्रयोग किया गया।

उपकरण :-

- शोध अध्ययन के उद्देश्य 'केन्द्रीय विद्यालय' द्वारा संबद्ध विद्यालयों में सतत् एवं समग्र मूल्यांकन हेतु अपनाई जाने वाली विविध तकनीकों का अध्ययन हिन्दी तथा सामाजिक विज्ञान विषयों के सन्दर्भ में करना की प्राप्ति हेतु उपकरण के रूप में शोधार्थी ने साक्षात्कार एवं अवलोकन द्वारा जानकारी को प्राप्त किया।

- शोध अध्ययन के उद्देश्य 'विद्यार्थियों की समग्र उपलब्धि के सन्दर्भ में सी.सी.ई. की प्रभाविता का अध्ययन की प्राप्ति के लिए शोधार्थी द्वारा हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान विषय के लिए उपलब्धि परीक्षण का निर्माण किया साथ ही बुद्धिलब्धि ज्ञात करने हेतु डॉ. ओझा एवं रे चौधरी का मानक परीक्षण का प्रयोग किया क्योंकि बुद्धिलब्धि को सहचर लिया गया।

विश्लेषण एवं विवेचना :-

परिकल्पना के आधार पर आंकड़ों से प्राप्त परिणामों को निम्न तालिका में दर्शाया गया है।

प्रथम परिकल्पना

सारणी – 01

न्यादर्श (sample)	न्यादर्श का आकार (N)	मध्यमान (m)	मानक विचलन (sd)	टी-मान (t-value)	स्वतंत्रता स्तर (df)	सार्थकता (sig)
मा.शि.मण्डल, म.प्र. से संबंधित स्कूल (control group)	200	40.65	4.225			
केन्द्रीय विद्यालय संगठन से संबंधित स्कूल (experimental group)	200	39.59	5.284	.2.216	398	0.027

सारणी से स्पष्ट है कि टी का प्राप्त मान 2.216 तालिका मान 0.05 स्तर से अधिक है इसलिए शुन्य परिकल्पना निरस्त की जाती है। अतः यह कहा जा सकता है कि सी.सी.ई. द्वारा पढ़ाये जाने वाले विद्यार्थियों एवं परम्परागत शिक्षण द्वारा पढ़ाये जाने वाले विद्यार्थियों के पश्च हिन्दी उपलब्धि माध्य प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर होता है।

इसका मुख्य कारण कक्षा में शिक्षक छात्र अनुपात सही होना, केन्द्रीय विद्यालय के शिक्षकों का हिन्दी शिक्षण का तरीका अच्छा एवं उच्चारण स्पष्ट होना। विद्यार्थियों की विद्यालय में नियमित उपस्थिति का होना इकाई मूल्यांकन होने के कारण।

द्वितीय परिकल्पना

सारणी – 02

न्यादर्श (sample)	न्यादर्श का आकार (N)	मध्यमान (m)	मानक विचलन (sd)	टी-मान (t-value)	स्वतंत्रता स्तर (df)	सार्थकता (sig)
मा.शि.मण्डल, म.प्र. से संबंधित स्कूल (control group)	200	39.59	5.162	.0452	398	0.652
केन्द्रीय विद्यालय संगठन से संबंधित स्कूल (experimental group)	200	39.75	4.797			

सारणी से स्पष्ट है कि टी का मान 0.452 है जो कि 0.05 सार्थकता स्तर ($df = 398$) सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। अतः यह कहा जा सकता है कि सी.सी.ई. द्वारा पढ़ाये जाने वाले विद्यार्थियों एवं परम्परागत शिक्षण द्वारा पढ़ाये जाने वाले विद्यार्थियों के पश्च सामाजिक विज्ञान की उपलब्धि के प्राप्तांकों में अंतर नहीं होगा। इसका मुख्य कारण दोनों ही समूह में विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय में रुचि होना, कक्षा का वातावरण सहज एवं सुगम्य होना, कक्षा कक्ष में प्रयोग के सभी उपकरण, चार्टों एवं नक्शों के द्वारा शिक्षण अधिगम होना, दोनों ही समूह में कक्षा के विद्यार्थियों का आपसी समन्वय अच्छा होना है।

तृतीय परिकल्पना

सारणी – 03

Source of Variance	df	ss	mss	f-value
Among	1	335.53	335.53	

Within	397	7901.98	19.90	16.86
Total	398	8236.51		

sig. at 0.01 level

सारणी से स्पष्ट है कि f का व्यवस्थित मान 16.86 है जो कि स्वतंत्रता स्तर $1/398$ एवं 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः हमारे द्वारा दी गई शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है। आगे स्पष्ट है कि सतत् एवं समग्र मूल्यांकन द्वारा पढ़ाये जाने वाले विद्यार्थियों के माध्य प्राप्तांक 40.65 तथा परम्परागत शिक्षण द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थियों के माध्य प्राप्तांक 39.59 से सार्थक रूप से उच्च है, अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि सतत् एवं समग्र मूल्यांकन द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थियों का हिन्दी विषय की उपलब्धि पर यह उपचार प्रभावपूर्ण रहा जबकि बुद्धिलब्धि को सहचर के रूप में लिया गया है। इसका प्रमुख कारण निम्न है :-

- केन्द्रीय विद्यालय संगठन द्वारा संचालित विद्यालयों के विद्यार्थियों का IQ स्तर उच्च होना।
- अन्य विषयों के साथ-साथ हिन्दी विषय पर भी ध्यान देना।
- माता-पिता या पालकों का समय-समय पर विद्यालय में जाकर विद्यार्थियों की प्रगति के बारे में जानना।
- हिन्दी विषय से संबंधित परियोजना कार्य देना, जैसे कविता निर्माण, नाटक, कहानी लेखन आदि।

चतुर्थ परिकल्पना

सारणी – 04

Source of Variance	df	ss	mss	f-value
Among	1	588.25	588.25	27*
Within	397	8649.34	21.79	
Total	398	9237.59		

सारणी से स्पष्ट है कि f का मान 27 है, जो कि स्वतंत्रता स्तर $1/398$ एवं 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है अर्थात् हमारी परिकल्पना निरस्त की जाती है। इसका प्रमुख कारण निम्न है।

- केन्द्रीय विद्यालय संगठन द्वारा संचालित विद्यालयों में विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि को बढ़ाने के लिये समय-समय पर प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है, जो कि विषय से संबंधित होती है, जबकि परम्परागत शिक्षण वाले विद्यालयों में ऐसे आयोजन कम या नहीं के बराबर होते हैं।
- केन्द्रीय विद्यालय संगठन द्वारा संचालित विद्यालयों के विद्यार्थियों का मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा होना एक कारण है।
- माता-पिता या अभिभावकों का शिक्षित होना तथा बच्चे की प्रत्येक गतिविधियों पर ध्यान देना।
- कमजोर विद्यार्थियों के लिये निदानात्मक एवं उपचारात्मक कक्षाएँ केन्द्रीय विद्यालय से संबंधित विद्यालयों में आयोजित होना।
- समय-समय पर इकाईवार टेस्ट का आयोजन विद्यालय में विषयवार होते रहना।

शोध निष्कर्ष :-

प्रस्तुत शोध अध्ययन के पश्चात यह कहा जा सकता है कि केन्द्रीय विद्यालय संगठन द्वारा संचालित विद्यालयों के विद्यार्थियों की हिन्दी विषय की उपलब्धि में तो अंतर है किन्तु सामाजिक विज्ञान विषय की उपलब्धि लगभग समान है। हिन्दी विषय की उपलब्धि में अंतर होने का प्रमुख कारण है –

- विद्यार्थियों को परियोजना कार्य देना तथा उन्हें स्वयं करके सीखने पर जोर देना है।
- विद्यालय में विद्यार्थियों की उपस्थिति 100 प्रतिशत होना।
- समय-समय पर निदानात्मक एवं उपचारात्मक कक्षाएँ संचालित होना।
- कक्षा-कक्ष में प्रयोग के आधार पर शिक्षण अधिगम होना।
- माता-पिता का विद्यालय में सतत् सम्पर्क में होना।
- विद्यार्थियों का स्वास्थ्य अच्छा होना।

सन्दर्भ ग्रंथ :

Agrawal, J.C. (2005), *Essential of Examination System*, New Delhi: Vikas Publishing House, Pvt. Ltd.

NCERT (2003), *Continuous and Comprehensive Evaluation, Teachers Handbook for Primary Stage*, New Delhi, NCERT.

Patel R.N. (1978), *Educational Evaluation – Theory and Practice*, New Delhi: Himalaya Publishing House.

अस्थाना, विपिन(2005): *मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन*, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

गैरेट, हेनरी ई.(2010): *शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग*, कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली।

कपिल, एच.के.(2008): *सांख्यिकी के मूल तत्व*, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।